B.A. II

सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकीय एवं सूचना - प्रौद्योगिकीय कारक

प्र०।— संस्कृति की परिभाषा दीजिए तथा सामाजिक परिवर्तन में सहायक सांस्कृतिक कारकों की विवेचना कीजिए।

उ० - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती समाज में रह कर ही पूरी करता है। जबकि मजूमदार ने तो संस्कृति को ही मनुष्य का जीवन माना है। मजूमदार का मानना है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती संस्कृति के माध्यम से करते हैं। संस्कृति में धर्म, कला, विज्ञान, विश्वास, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा मानव द्वारा निर्मित सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती है। यही वस्तुएं इसका सांस्कृतिक पर्यावरण कहलाती है। सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न कारकों में सांस्कृतिक एवं प्रौद्योगिकीय कारकों को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। सोरोकिन एवं मैक्स वेबर जैसे समाजशास्त्री सामाजिक परिवर्तन लाने में सांस्कृतिक कारकों को महत्वपूर्ण मानते है। सांस्कृतिक कारकों को समझने से पहले संस्कृति के अर्थ को जान लेना जरूरी है।

संस्कृति का अर्थ

'संस्कृति' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है — 'सम' तथा 'कृति'। 'सम' उपसर्ग का अर्थ है 'अच्छा' तथा 'कृति' शब्द का अर्थ है 'करना'। अंग्रेजी का 'कल्चर' (Culture) शब्द लैटिन भाषा के 'Colere' शब्द से बना है, जिसका अर्थ 'जोतना' अथवा 'भूमि पर हल-चलाना' है। इसी से खेती करने की कला के लिए 'कृषि' शब्द बना है। परन्तु अगरहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दियों में इस

Scanned with CamScanner

शब्द का प्रयोग व्यक्तियों के परिमार्जन के लिए भी किया जाने लगा। जो व्यक्ति पढ़ा-लिखा था, उसे सुसंस्कृत कहा जाता था। परन्तु सामाजिक विज्ञानों में यह शब्द इस अर्थ में प्रयोग नहीं किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में संस्कृति एक जटिल अवधारणा है। संस्कृति में व्यवहार के ढंग, भौतिक तथा अभौतिक प्रतीक, परम्पराएं ज्ञान, विश्वास, अविश्वास आदि सन्निहित होते हैं।

'वास्तव में संस्कृति सदैव ही एक ऐसी वस्तु है जिसे अपनाया जा सके, जिसका उपयोग किया जा सके, जिस पर विश्वास किया जा सके, जिस पर अनेक व्यक्तियों का अधिकार हो तथा जो अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सम्पूर्ण समूह के जीवन पर निर्भर करती हो।'

संस्कृति की परिभाषाएँ

संस्कृति की परिभाषाएँ प्रमुख विद्वानों ने निम्न प्रकार से दी हैं —

1. टॉयलर के अनुसार :— "संस्कृति वह जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा और ऐसी ही दूसरी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है, जिसे मानव समाज के सदस्य होने के रूप में प्राप्त करता है।"

2. मैकाइवर एवं पेज के अनुसार :— "संस्कृति हमारे नित्य प्रतिदिन के रहन-सहन, साहित्य, धर्म, कला, मनोरंजन तथा आनन्द में पाए जाने वाले विचारों के ढंग में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।"

Scanned with CamScanner

सामाजिक परिवर्तन में सहायक सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन में सहायक सांस्कृतिक कारकों की विवेचना निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत की जा सकती हैं—

1. **प्रौद्योगिकी** — संस्कृति के भौतिक पक्ष में होने वाले परिवर्तनों का प्रमुख साधन प्रौद्योगिकी है। प्रौद्योगिकी आज के विकास का युग है। जिसने हमारे जीवन को तीव्र गति से बदला है। आदिम समाज से प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही हम आधुनिक समाज तक का सफर तय किया है। हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है।
   1. आज खेतों में काम करने के लिए ट्रैक्टर।
   2. यातायात एवं आवागमन के लिए बस, ट्रेन, हवाईजहाज।
   3. अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने के लिए तार, टेलीफोन, रेडियो, समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं आदि।
   4. दुश्मन से रक्षा करने एवं दुश्मनों का संहार करने के लिए टैंक एवं आधुनिक हथियार।
   5. चिकित्सा के क्षेत्र में मानव शरीर के अंगों का सफल ऑपरेशन एवं प्रत्यारोपण। आज ये सभी प्रौद्योगिकी परिवर्तन के कारण ही सम्भव हो पाये है। हर युग में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। वेब्लन ने सामाजिक परिवर्तन लाने में प्रौद्योगिक कारक को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है।

Scanned with CamScanner

2.- नवाचार (Innovations)- नवाचारों को भी सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कारक माना जाता है। नवाचार से अभिप्राय किसी नवीन विचार, विश्वास, अवधारणा, उपकरण, अविष्कार अथवा खोज से है। सेपियर के शब्दों में — "नवाचार किसी स्वीकृत सामाजिक लक्ष्य को नवीन ढ़ग से प्राप्त करने अथवा उस नवीन सामाजिक लक्ष्य को प्राप्त करने के एक साधन से सम्बन्धित विचार है।"

आदिम समाज से लेकर आज तक जो भी प्रत्येक समाज में जो परिवर्तन सम्भव हुए है, वह इन्हीं नवाचारों यानि कि नई सोच का परिणाम है।

3. परसंस्कृतिग्रहण (Acculturation)— परसंस्कृतिग्रहण का आशय है, एक संस्कृति द्वारा किसी अन्य संस्कृति के भौतिक एवं अभौतिक दोनों प्रकार के तत्वों को अपना लेने से है। फेयरचाइल्ड ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "सम्पर्क के माध्यम से, विशेषत: उच्च सभ्यता के लोगों के साथ सम्पर्क एवं संस्कृतिग्रहण" को परसंस्कृतिग्रहण कहा जाता है। जनजातीय सामाजिक संगठन में होने वाले परिवर्तनों के लिए परसंस्कृतिग्रहण की प्रक्रिया ही उत्तरदायी मानी जाती है।

Scanned with CamScanner

क्रमशः

B.A. II

सामाजिक परिवर्तन में सहायक सांस्कृतिक कारक

4. धर्म एवं वैचारिकी – सामाजिक परिवर्तन लाने में धर्म एवं वैचारिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। वैचारिकी का अर्थ विचारों एवं नियमों की उस व्यवस्था से है जो आर्थिक अथवा राजनीतिक सिद्धान्तों का आधार होती है। उदाहरणार्थ – जब हम मार्क्सवाद की बात करते हैं तो हमारे सामने मार्क्स के वे विचार होते हैं जो आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वैसे ही मैक्स वेबर, जेम्स फ्रेजर, जार्ज सिमेल इत्यादि विद्वानों का कहना है कि धर्म से सम्बन्धित विचारधारा सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख कारक है।

5. सांस्कृतिक प्रसार – जब किसी एक संस्कृति में होने वाले नवाचारों को दूसरी संस्कृति के लोग अपनाते हैं तो इसे सांस्कृतिक प्रसार कहते हैं। पश्चिमी संस्कृति के प्रसार के परिणामस्वरूप भारत में अनेक ऐसे आधुनिक मूल्यों, विश्वासों एवं व्यवहार के ढंगों को प्रोत्साहन मिला है जो मूल भारतीय संस्कृति से भिन्न है।

6. सांस्कृतिक संघर्ष – सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से सांस्कृतिक संघर्ष निम्नलिखित चार रूपों में प्रतिफलित हो सकता है –

1. सबल संस्कृति निर्बल संस्कृति को समाप्त ही कर दे। विश्व की अनेक संस्कृतियाँ; जैसे – ग्रीक एवं रोमन आज इतिहास के पन्नों में ही दर्ज हैं।
2. इतिहासकारों का मानना है कि भारत में आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के साथ स्वस्थ समन्वय से हिन्दू संस्कृति का उदय हुआ है। अर्थात दो संस्कृतियों में सामंजस्य से धीरे-2 एक नवीन संस्कृति का उदय हो जाए।
3. दोनों संस्कृतियाँ कालान्तर में सह-जीवन व्यतीत करने के तरीकों का विकास कर लें तथा उनकी आदतें हो जायें। (यथा भारत में हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृतियाँ)
4. एक संस्कृति दूसरी संस्कृति में पूर्णतः आत्मसात हो जाए। उदाहरणार्थ, शक एवं हूण कबीले भारत में आकर हिन्दू संस्कृति में समाविष्ट हो गए। आज उनके अवशेष भी शेष नहीं हैं।

Scanned with CamScanner

7. सांस्कृतिक विलम्बना (Cultural lag) — सांस्कृतिक विलम्बना से अभिप्राय संस्कृति के भौतिक एवं अभौतिक पक्ष में होने वाली पिछड़ से है। भौतिक संस्कृति में परिवर्तन शीघ्रता से हो जाते है, जबकि अभौतिक संस्कृति आदर्शो, मूल्यों, रीति-रिवाजों से सम्बन्धित होने के कारण बहुत कम परिवर्तित होती है। यही सांस्कृतिक विलम्बना अर्थात अभौतिक संस्कृति का भौतिक संस्कृति के समान आगे बढ़ने का प्रयास सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। संस्कृति समाज की ही उपज है और समाज में घुली-मिली धारणा है।

संस्कृति का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

प्रत्येक समाज में संस्कृति के दोनों अंग (भौतिक एवं अभौतिक) विद्यमान होते हैं। भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति व्यक्ति के जीवन को पूर्ण रूप से नियंत्रित करती है। संस्कृति अथवा सांस्कृतिक कारकों की सामाजिक परिवर्तन में भूमिका को इनके सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले अग्रलिखित प्रमुख प्रभावों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है —

1. प्रौद्योगिकीय विकास पर प्रभाव
2. आर्थिक जीवन पर प्रभाव
3. राजनीतिक संगठन तथा संस्थाओं पर प्रभाव
4. सामाजिक संगठन तथा संस्थाओं पर प्रभाव
5. व्यक्तित्व पर प्रभाव
6. धार्मिक जीवन पर प्रभाव
7. सामाजीकरण पर प्रभाव

संदर्भ सूची-

1. समाजशास्त्र, डॉ० धर्मवीर महाजन एवं डॉ० कमलेश महाजन (विवेक प्रकाशन 2018)

Scanned with CamScanner